विनोबा कथावली

■ वर्ष : द्वितीय ■ अंक : 2 ■ सितम्बर 2025

जब पूरा गाँव ही विद्यालय बन जाए...

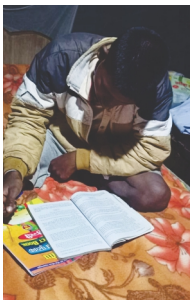

लोखंडी (जशपुर): अक्सर जो बच्चे विद्यालय में नियमित उपस्थित नहीं रहते, वे स्वाध्याय की कमी के कारण गली मोहल्ले में बेवजह घूमना, नशा करना जैसे असामाजिक गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं। पढ़ाई में अरुचि से मोबाइल फोन पर वीडियो देखकर समय बर्बाद करते हैं और गलत संगत में पड़ जाते हैं।

बच्चों को मोबाइल और गलत संगत से बचाने के लिए जशपुर जिले के हायर सेकेंडरी स्कूल, लोखंडी की प्राचार्या सुगंती बुनकर ने एक अनोखी पहल की।

सन 2022 में सुगंती जी ने विद्यालय की कमान संभाली। जैसे घर में माँ अपने परिवार को सँवारती है, वैसे ही उन्होंने स्कूल को सँवारना शुरू किया। उनकी सोच थी—"अनुशासन ही सबसे बड़ी रचनात्मकता है।" और उसी सोच के साथ उन्होंने पहला कदम उठाया।

उन्होंने ग्राम पंचायत के सदस्य, सरपंच, पालक और स्कूल प्रबंधन समिति को एक साथ बिठाया और समझाया कि यदि पूरा गाँव मिलकर बच्चों पर ध्यान दे, तो शिक्षा का माहौल अपने आप बन जाएगा। फिर उन्होंने अभिभावकों का व्हाट्सएप ग्रुप शुरू किया।

शाम 7 बजे से रात 10:30 बजे तक हर बच्चा घर पर पढ़ेगा। इस दौरान पालक उनके साथ बैठेंगे और पढ़ाई करते बच्चों की तस्वीरें व्हाटसऐप ग्रुप में भेजेंगे। नियम यह था कि यदि कोई बच्चा गली में घूमता मिल गया, तो ग्रामस्थ तुरंत उसे घर भेज देंगे।

धीरे-धीरे पूरा गाँव इस अनुशासन का हिस्सा बन गया। सुगंती जी ने कहा था, "अगर पूरा गाँव अपने बच्चों की पढ़ाई की जिम्मेदारी ले तो घर भी विद्यालय बन सकता है।"

एक अभिभावक, सुरेश साहनी जी ने भावुक होकर कहा, "हमारे समय में हमें कोई पढ़ाई की ओर खींचने वाला नहीं था। लेकिन अब हमारे बच्चों को पूरा गाँव संभाल रहा है। यह बहुत बड़ी बात है।"

एक अन्य माता मीरादेवी ने गर्व से कहा, "अब मेरा बेटा पढ़ाई छोड़कर बाहर नहीं भटकता। रोज शाम को किताब लेकर बैठता है और मैं उसकी तस्वीर खींचकर ग्रुप में डालती हूँ। यह नियम हमारे लिए वरदान बन गया है।"

बच्चों पर इसका गहरा असर पड़ा। कक्षा 10 का परिणाम 97.95% और 12वीं का 95% आया। उपस्थिति 85% तक पहुँच गई। बच्चों के इस प्रदर्शन से प्रेरित होकर गाँव के युवाओं में भी बदलाव दिखने लगा।

कक्षा 12 की छात्रा पूर्णिमाबाई ने मुस्कुराते हुए कहा, "पहले हमें पढ़ाई बोझ लगती थी लेकिन अब जब पूरा गाँव देखता है, तो हमें भी गर्व होता है कि हम कुछ अच्छा कर रहे हैं।"

कक्षा 10 का छात्र गौतम बोला, "जब सरपंच जी और पूरा गाँव इस कार्य में एक साथ है, तो लगता है कि मैं कुछ महत्वपूर्ण कर रहा हूँ और यह पढ़ाई मुझे दी गई एक जिम्मेदारी है।"

आज लोखंडी गाँव शिक्षा के वातावरण से भरा हुआ है। यह सिर्फ सुगंती जी का अनुशासन नहीं, बल्कि एक सामूहिक संकल्प की जीत है।

यही उद्देश्य है विनोबा शिक्षक सहायक कार्यक्रम का—ऐसी कहानियों पर प्रकाश डालना, ताकि सब जानें कि सरकारी स्कूल किसी भी निजी स्कूल से ज़्यादा गुणवत्ता प्रदान कर सकते हैं। यदि समाज उन पर भरोसा करे, तो यही स्कूल सबसे अच्छे, समग्रता से विकसित विद्यार्थी तैयार कर सकते हैं। ■

'Vinoba App हमारे लिए अहम साधन बन गया है'

श्री रविंद्र सोनटक्के, जिला शिक्षा अधिकारी (योजना), भंडारा

पेज 2

मॉर्निंग असेंबली और गांधीगिरी

विनोबा विशेष

पेज 4, 5, 6

देखो, गणेश जी को साफ-सफाई पसंद है। अगर तुम स्कूल साफ रखोगे, तो हो सकता है कि वह तुम्हारी होमवर्क करने में मदद करे!

'Vinoba App हमारे लिए अहम साधन बन गया है'

भंडाराः मुरमाडी ग्राम पंचायत के एक छोटे से विद्यालय में 45 बच्चे पढ़ते हैं। नियम तो कहता है कि वहाँ दो शिक्षक होने चाहिए, लेकिन वहाँ चार शिक्षक पढ़ा रहे थे। पता चला कि उनमें से दो चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी थे। योग्यता पोस्ट-ग्रेजुएशन तक की थी, और दिल में बच्चों को पढ़ाने की लगन थी। उन्होंने झाड़ू-पोंछा करने से आगे बढ़कर बच्चों पढ़ाना शुरू कर दिया। इससे न केवल उन्हें सम्मान मिला, बल्कि बच्चों को भी अतिरिक्त सहारा मिला।

इसी तरह, लाखनी ब्लॉक के एक विद्यालय में मैंने देखा—मुसलाधार बारिश के बावजूद बच्चे, शिक्षक और अभिभावकों ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सामूहिक परेड में हिस्सा लिया।"

भंडारा ज़िले के शिक्षा अधिकारी (योजना) श्री रविंद्र सोनटक्के ने हाल ही में विनोबा कथावली टीम से बातचीत की शुरुआत इन्हीं सकारात्मक अनुभवों से की। बातचीत के दौरान उन्होंने ज़िले की शिक्षा व्यवस्था पर विस्तार से अपने विचार साझा किए। वर्तमान में वे शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक) का अतिरिक्त प्रभार और महाराष्ट्र राज्य शिक्षण मंडल, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक, नागपुर के सचिव का दायित्व भी निभा रहे हैं।

वर्ष 2023-24 में जब आप यहाँ आए, तब क्या चुनौतियाँ थी? इनसे निपटने के लिए शिक्षा विभाग ने क्या पहल की?

राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सर्वेक्षण में भंडारा जिला 33वें स्थान पर था। सबसे अधिक कमी भाषा और गणित में नज़र आई। प्रतियोगी और छात्रवृत्ति परीक्षाओं में भी हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चे पिछड़ रहे थे।

भंडारा जिला परिषद के तत्कालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री समीर कुर्तकोटी जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में, सबसे पहले हमने बच्चों को पढ़ने और सुनने की आदत डालने पर ज़ोर दिया। सुबह की प्रार्थना सभा हो या 'बस्तामुक्त शनिवार'—हमने स्कूलों में अच्छी कहानियाँ सुनाना और पढ़वाना शुरू किया। इसमें शिक्षक भी शामिल हुए। धीरे धीरे यह गतिविधि रोज़ की पढ़ाई का हिस्सा बन गई। फिर हमने तालिकाएँ कंठस्थ करवाने पर ज़ोर दिया। अंग्रेज़ी बोलने में सुधार के लिए Vinoba App हमारे लिए वरदान साबित हुआ। धीरे-धीरे बच्चे अंग्रेज़ी सीखने लगे। बदलाव दिखने लगा।

श्री रविंद्र सोनटक्के
शिक्षा अधिकारी (योजना), भंडारा

दीर्घकालिक शिक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए क्या किया जा रहा है?

नैतिक शिक्षा अकादमिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और शिक्षा का असली उद्देश्य गुणात्मक विकास है। इसी सोच के साथ हम अपने अगले कार्यक्रमों की योजना बना रहे हैं।

हमारा लक्ष्य ऐसे छात्रों को तैयार करना है जो न केवल बौद्धिक रूप से उत्कृष्ट हों, बल्कि ईमानदारी, सम्मान और सत्यनिष्ठा जैसे मजबूत मूल्यों को भी अपनाएँ। यह दृष्टिकोण छात्रों का समग्र व्यक्तित्व विकसित करने में भी सहायक होगा। और इसमें विनोबा कार्यक्रम की भूमिका निस्संदेह महत्वपूर्ण रहेगी।

महाराष्ट्र सरकार ने जब 'महावाचन' जैसे बड़े पैमाने के पठन अभियान की शुरुआत की, तब हम पहले ही अपने स्तर पर पठन को लेकर प्रयोग शुरू कर चुके थे. हमने बच्चों को छात्रवृत्ति और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करना भी शुरू किया। हमारा मक़सद केवल परिणाम पाना नहीं था, बल्कि बच्चों में आत्मविश्वास जगाना था। इस प्रक्रिया में बच्चों की पढ़ाई में भी समग्र सुधार दिखा।

हमने 'बस्तामुक्त शनिवार' का पूरा फायदा उठाया और इसे बच्चों और शिक्षकों के लिए सीखने का उत्सव बना दिया -- कहानियाँ सुनाना, खेल, गायन, सामान्य ज्ञान, गणित क्विज़, कविता पाठ और योग जैसी गतिविधियाँ आयोजित कीं। इन सब में Vinoba कार्यक्रम की भूमिका अहम रही। Vinoba के छोटे-छोटे उपहार और नियमित सम्मान ने शिक्षकों को सक्रिय और प्रेरित रखा।

2024 में परख परीक्षा में हम 33वें स्थान से 11वें स्थान पर पहुँच गए। हमारा लक्ष्य है कि भंडारा ज़िले को टॉप 5 में लाएँ।

Vinoba App की क्या मदद हुई?

Vinoba App हमारे लिए एक अहम साधन बन गया। पढ़ाई और गतिविधियों में भी इसका बड़ा योगदान रहा। इसके जरिए ज़िले के हर शिक्षक से जुड़ना, उनके काम की निगरानी करना और तुरंत फीडबैक देना आसान हो गया। हमारे 11वीं और 12वीं के छात्र, जिन्हें JEE और NEET जैसी परीक्षाओं के लिए इस साल Vinoba कार्यक्रम के तहत चल रहा Polestar प्रोग्राम एक वरदान साबित होनेवाला है।

ज़िले के स्कूलों और शिक्षकों की सफलता के कुछ उदाहरण?

जी हाँ, चुनौतियों के बावजूद, कुछ स्कूल और शिक्षकों ने अपनी बेहतरीन कार्यशैली से अलग पहचान बनाई है। सोरना ZP स्कूल के शिक्षक कैलाश चव्हाण, दवडीपार ZP स्कूल, और दूर-दराज़ के झड़गाँव ZP स्कूल जैसे कई उदाहरण हमारे पास हैं। ये शिक्षक न सिर्फ अपने छात्रों को, बल्कि अन्य शिक्षकों को भी प्रेरित करते हैं। जब शिक्षक मूल्य-आधारित शिक्षा देते हैं अभिभावकों को यह विश्वास हो जाता है कि यह स्कूल उनके बच्चों के लिए सबसे सही है।

आज इन सरकारी (मराठी माध्यम) स्कूलों की ओर स्थानीय नेता, विधायक, सांसद और ज़िला स्तर के अधिकारी आकर्षित हो रहे हैं। निजी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे अब बड़ी संख्या में यहाँ दाखिला ले रहे हैं। अकेले भंडारा विकासखंड में यह संख्या लगभग 374 है। ■

कूट प्रश्न 13 का उत्तर

TEACH
1. REACH 2. LEACH 3. LEASH
4. LEANS 5. **LEARN**

रायपुर: हाल ही में आयोजित एक कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी हिमांशु भारतीय और DMC खेम सिंह पटले द्वारा 5 शिक्षकों को जिला स्तरीय 'पोस्ट ऑफ़ द मंथ' (POM) पुरस्कार से नवाज़ा गया। इस अवसर पर OLF के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

बेगूसराय (बिहार): जिले के दंदरी, गढ़पुरा, बलिया, मटिहानी, नावकोठी, प्रखंडों में, OLF के प्रोजेक्ट ऑफिसर श्रवण मिश्रा और आर्या कुमारी ने कुल 238 शिक्षकों और ७ अधिकारियों के लिए विनोबा एप्लीकेशन ओरिएंटेशन सफलतापूर्वक आयोजित कर उन्हे ऐप के इस्तेमाल पर प्रशिक्षित किया।

धमतरी :15 अगस्त को जिले में आयोजित कार्यक्रम में DEO देवेश कुमार सूर्यवंशी सर और BEO लीलाधर चौधरी ने 3 शिक्षकों को POM, 1 को 'बोलेगा बचपन', 1 को 'क्रिएटिव राइटिंग' के लिए और 1 को 'लाइब्रेरी बैग' से सम्मानित किया। विभाग के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

दंतेवाड़ा: यहाँ आयोजित एक जिला स्तरीय कार्यक्रम में DEO (Incharge) अहिल्या ठाकुर, DMC हरीश गौतम और APC कमल कर्मकारद्वारा अप्रैल से जुलाई महीने के लिए 13 शिक्षकों को POM पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नागपुर: 21 अगस्त को आयोजित कार्यक्रम में शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक) श्री निखिल भुयारने जुलाई 2025 महीने के लिए 10 शिक्षकों को POM, टॉप क्लस्टर, स्पेलिंग बी और मॉर्निंग असेंबली जैसे विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया।

नासिक : 20 अगस्त को आयोजित एक जिला स्तरीय कार्यक्रम में, सीईओ श्री ओंकार पवार और जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. भास्कर कानोज व उप शिक्षा अधिकारी श्री दहिफले ने 9 शिक्षकों को POM सहित विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया।

सोलापुर: 13 अगस्त को जिला परिषद के CEO श्री कुलदीप जंगम ने विनोबा ऐप में 'सेवा सुविधा' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर 18 शिक्षकों को जिला स्तरीय POM पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

पुणे: नासा शैक्षिक यात्रा के लिए ZP स्कूलों से चयनित 25 छात्रों को बधाई देने के बाद डॉ. चंद्रकांत पुलकुंदवार (डिवीजनल कमिशनर), गजानन पाटिल (CEO, पुणे ZP), संजय नाइकडे (शिक्षा अधिकारी), संजय डालमिया (CEO, OLF) व अन्य अधिकारी।

मॉर्निंग असेंबली और गांधीगिरी !

उदेगाँव (गडचिरोली): ज़िला मुख्यालय से 32 किलोमीटर दूर स्थित ज़िला परिषद प्राथमिक विद्यालय एक अलग ही चुनौती का सामना कर रहा था। समस्या केवल पढ़ाई की नहीं थी, बल्कि यह सुनिश्चित करने की थी कि बच्चे स्वच्छ और साफ़-सुथरे रहकर स्कूल आएं। अधिकांश छात्र अस्त-व्यस्त स्थिति में स्कूल पहुँचते—गंदे कपड़े, बिखरे बाल, बढ़े हुए नाखून, और कई बार तो बिना नहाए ही। स्वच्छता की कमी के कारण वे बार-बार बीमार पड़ते थे लेकिन कई बार समझाने के बावजूद भी कोई बदलाव नहीं आ रहा था।

स्कूल के प्रधानाध्यापक विलास दरडे बताते हैं, "हमने बच्चों के माता-पिता से भी बात की पर नतीजा वही। फिर एक सुबह, जब मैं स्कूल के बगीचे से गुज़र रहा था, तो मेरी नज़र एक खिले हुए ताज़े गुलाब पर पड़ी। तभी मन में विचार आया—“हम इस एक गुलाब की मदद से स्वच्छता को गर्व और प्रेरणा का कारण बना दें तो?"

अगले ही दिन, विलास जी ने सुबह की प्रार्थना सभा में घोषणा की – “हर सुबह, जो भी बच्चा अच्छे से नहा-धोकर, कंघी करके, साफ़ कपड़े पहनकर और नाखून काटकर आएगा, उसे यह गुलाब मिलेगा। और पूरा दिन वह गुलाब उसकी यूनिफॉर्म में लगा रहेगा।”

शुरुआत में, केवल कुछ ही बच्चे प्रयास करते दिखे। वे गुलाब को सीने पर लगाए गर्व से खड़े होते। "बस, यही काफ़ी था," विलास जी मुस्कुराकर कहते हैं। धीरे-धीरे अन्य छात्र भी गुलाब पाने की होड़ में लग गए। कुछ ही दिनों में, ज़्यादा बच्चे संवरकर आने लगे, और हफ़्तों में तो पूरा स्कूल बदलने लगा।

बच्चों का उत्साह देखने लायक था। सुबह असेंबली शुरू होने से पहले ही वे एक-दूसरे को देखकर जाँचने लगे—"तेरे नाखून कटे हैं क्या?" "बाल कंघी किए न?" कुछ तो आईने के बिना ही अपने बालों को ठीक करते रहते। गुलाब का इंतज़ार अब सुबह की दिनचर्या का हिस्सा बन गया। जो बच्चा चुना जाता, उसकी मुस्कान पूरे दिन बनी रहती। साथी बच्चे उससे पूछते—“अरे, गुलाब तुझे कैसे मिला?” और यही सवाल दूसरे बच्चों को प्रेरित करता।

यह बदलाव केवल स्कूल तक सीमित नहीं रहा। विलास जी बताते हैं, "बच्चे घर जाकर इसकी चर्चा करने लगे, और धीरे-धीरे माता-पिता भी जागरूक हुए। वे माताएँ, जो पहले ऐसे ही बच्चों को स्कूल भेज देती थीं, अब ध्यान रखने लगीं कि बच्चे नहा-धोकर, अच्छे कपड़े पहनकर जाएं।"

विलास जी के इस गांधीगिरी ने अच्छा असर दिखाया। सिर्फ़ तीन महीनों में, स्कूल का माहौल पूरी तरह बदल चुका था—सिर्फ़ बाहरी रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिकता भी बदल गई थी। बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ा, उनके सीखने का उत्साह बढ़ा, और वे खुद को पहले से बेहतर समझने लगे।

"स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है," विलास जी आत्मविश्वास से कहते हैं। "अगर निजी स्कूलों के बच्चे स्वच्छता का पालन कर सकते हैं, तो सरकारी स्कूलों के बच्चे क्यों नहीं?"

वे बताते हैं कि विनोबा टीम से मिलती सराहना ने हमारे छात्रों का उत्साह दुगना कर दिया है। जब स्टोरीटेलिंग, पोएट्री रेसिटेशन, स्पोकन इंग्लिश जैसी गतिविधियों के लिए स्कूल को पुरस्कार या सम्मान मिलता है, तो हमारी मॉर्निंग असेंबली खिल उठती है। बच्चे तालियाँ बजाते हैं, एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं, और हर दिन थोड़ा और बेहतर करने का संकल्प लेते हैं। इस अर्थ में विनोबा ऐप और हमारी प्रार्थना सभा का एक पक्का नाता बन गया है।

आज भी यह परंपरा जारी है। हर सुबह, बच्चे बेसब्री से उस पल का इंतज़ार करते हैं जब 'दिन का गुलाब' चुना जाएगा... और यह गुलाब अब नए-नए कारणों के लिए मिलता है—कोई 37 का पहाड़ा कह पाए तो, कोई कविता याद कर के सुनाए तो, कोई अच्छा सा भाषण कर दे तो, गीत सुना दे तो, योग-आसन कर के दिखा दे तो।

असेंबली अब केवल प्रार्थना का मंच नहीं, बल्कि बच्चों के आत्मविश्वास और रचनात्मकता का उत्सव बन चुकी है। ■

हौसलों की सभा

मछली जल की रानी है,
जीवन उसका पानी है...
हाथ लगाओ डर जाती है,
बाहर निकालो... ...

सुबह की हल्की धूप, स्कूल के प्रांगण में बच्चों की कतारें, और हवा में तैरती फाल्गुनी की मासूम आवाज़। पंतोरा कन्या आश्रम शाला, गरियाबंद — जहाँ ज़िंदगी के अर्थ बच्चों की मुस्कानों में बसते हैं। पहली कक्षा की फाल्गुनी मंच के बीचों बीच, उजली फ्रॉक में, पूरे विश्वास से कविता सुना रही थी। उसकी आँखों में समंदर-सा विस्तार और चेहरे पर हौसले की नई चमक थी।

अभी पंद्रह दिन पहले की ही तो बात है, फाल्गुनी जब पहली बार मंच पर आई, तो कांपती आवाज़ में बोल भी न पाई—आँखों से आँसू बहने लगे। शिक्षिका नीता सारवा ने उसे धीरे से पास बुलाया, उसकी पीठ सहलाई और कहा—"डर किस बात का बेटा? जो याद आए, वही बोल दो। कोई तुम्हें डाँटेगा नहीं, यहाँ तो सब अपने हैं।"

फिर, पहली बार उसकी नन्ही हथेलियों में माइक आया। खुद ही की आवाज़ उसके कानों को जैसे एक मीठा सा विस्मय दे गई। डरते-झिझकते उसने बोलना शुरू किया—शब्द दर शब्द उसका आत्मविश्वास पंख पसारने लगा। कविता पूरी भले न थी, उसकी मुस्कुराहट पूरी थी।

शाम को वह आई - "मैडम, माँ के पास जाना है - वहाँ रहूँगी, फिर पूरी कविता याद करके लौटूँगी!" नीता जी मुस्कुराईं - जैसे बसंत की पहली बयार स्कूल में उतर आई हो।

अब दो साल हो चले, इस स्कूल की प्रार्थना सभा में हर सुबह कोई नई कहानी जन्म लेती है। कभी बूंदों-सी हँसी, कभी छाँव-सी शरारत, कभी किसी की कोशिशों की ऊष्मा। पहले ये सभा भी बस नाम भर की होती थी - कुछ भी नया नहीं, सब बेमन से, जब तक कि बड़े साहब (कलेक्टर) ने आदेश न दे दिया - "बच्चों की सुबह को रंगीन बनाइए... यहाँ उनका मन चहके, यही मंच उनकी उड़ान का आसमान बने।" फिर तो सारी अध्यापिकाएँ जुट गईं - किसी ने कविता सिखाई, कोई अभिन्न नृत्य, कोई लोकगीत, कोई छोटी-सी नाट्य कृति। इन दो सालों में किताबों से परे, इन बच्चियों ने मंच से सीखा - डर को हराना, संकोच को तोड़ना और अपनी आवाज़ को खोलना।

विनोबा ऐप के बारे में नीता जी कहती हैं—"इस ऐप ने बच्चियों का हौसला बढ़ाया है। अब ये न सिर्फ गाँव बल्कि सारी दुनिया को देख सकती हैं, सीख सकती हैं। न जाने कितने नए रंग हैं, जो वह ऐप इन्हें दिखाएगा।"

सबसे बड़ी बात जो नीता जी ने कही - "कई बच्चियाँ जो पढ़ाई में पीछे रह जाती थीं, मंच पर जैसे उनमें नया चांद उतर आता! खूब ताली बजती, सराहना मिलती - फिर वही बच्ची मन ही मन सोचने लगती, 'जब मैं कविता बोल सकती हूँ, तो बाकी सबक भी क्यों नहीं?'"

अभी तो सफर लंबा है। मगर आज फाल्गुनी और उसकी सहेलियाँ स्कूल के हर कोने में अपना गीत, अपनी हँसी, अपनी पहचान रच रही हैं—और यही असली जीत है, नीता मैडम, उनके सहयोगियों की, पूरे स्कूल की।

कविता

मुक्त असू दे तिचे आभाळ

मुक्त असू दे तिचे आभाळ, तिचे जग
मुक्त असू दे तिचे जग तिचे विस्तीर्ण क्षितीज
अन तिची उंच भरारी

मुक्त असू दे
तिची प्रभा तिचे व्यक्तिमत्व
अन तिची प्रतिभा.

मुक्त असू दे
तिचे अस्तित्व तिची अभिलाषा
अन तिची अभिव्यक्ती.

मुक्त असू दे
तिचे जगणे तिचा मुक्त श्वास
अन तिचा आनंद.

मुक्त असू दे
तिचे मानवीपणाचे अस्तित्व तिचे स्वातंत्र्य
अन तिच्या समानतेचे गाणे

मुक्त असू दे
तिच्या गुलामीच्या शृंखला तिचे सबलीकरण
अन तिचे रीतीभातीचे बंधपाश

मुक्त असू दे
तिच्यातील रणरागिणी, तिची संघर्षाची ज्योत
अन तिची तिमिराविरुद्धची लढाई

मुक्त असू दे
तिच्यातील ती चे कस्तुरीत्व, तिच्यातील अस्तित्व
अन तिचा आत्मविश्वास

तिच्या जगण्यासाठी
तिच्या जगासाठी
मुक्त असू दे तिचे आभाळ

श्रीमती मंगला जगन्नाथ गोतारणे
जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक), भंडारा

चव्हाणवस्तीने स्कैन किया बदलाव का QR कोड

चव्हाणवस्ती (सोलापुर): जब भी अर्थपूर्ण बदलाव आया है, उसकी शुरुआत किसी ऐसे व्यक्ति से हुई है, जिसने परिस्थिति की ज़रूरत को समझकर, पूरी दृढ़ता और साहस के साथ कदम बढ़ाया है—और फिर मेहनत, लगन और दूरदृष्टि से उसे पूर्णता तक पहुँचाया है। यह कहानी भी ऐसी ही सोच के एक शिक्षक की है, जिन्होंने अपनी छोटी सी स्कूल में बदलाव की अलख जगाई, और बच्चों की दुनिया ही बदल दी।

सोलापुर ज़िले के भंडीशेगाँव के पास एक छोटा-सा गाँव हैं — चव्हाणवस्ती। यहाँ की ज़िला परिषद प्राथमिक शाला में सुबह की प्रार्थना सभा महज़ एक औपचारिकता हो गई थी। वही कुछ बच्चे हर दिन मंच पर, वही पुरानी प्रार्थना, वही पुराना क्रम। बाकी बच्चों के लिए यह पल उत्साह का नहीं, बस इंतज़ार का होता।

फिर आए इस स्कूल के शिक्षक, केशव राठोड — जिनकी आँखों में बदलाव का सपना और दिल में उसे सच करने का हौसला था। उन्होंने सोचा, "अगर सुबह की शुरुआत ही बच्चों को थका दे, तो दिन में रंग कहाँ से आएँगे?"

यहीं से जन्म हुआ QR कोड आधारित डिजिटल प्रार्थना सभा के विचार का।

शुरुआत में, जब बच्चों को बताया गया कि अब वे एक कागज़ पर छपे QR कोड को स्कैन करेंगे, और तुरंत गाना, कविता या भाषण शुरू हो जाएगा — तो वे हैरान रह गए। अभी तक उनके लिए "स्कैन करना" सिर्फ दुकान पर मोबाइल से पेमेंट करनाथा। लेकिन यहाँ तो बात ही उलटी थी — बिना किसी इंसान के मंच पर खड़े हुए, बिना YouTube के झंझट और विज्ञापनों के, स्पीकर से सीधे देशभक्ति गीत या अच्छी बात सुनाई देने लगती थी।

बच्चों को यह बिल्कुल जादू जैसा लगा। उत्सुकता इतनी बढ़ी कि वे सुबह समय से पहले स्कूल आने लगे। और सबसे ख़ास बात — हर दिन एक बच्चे को यह जिम्मेदारी दी जाती कि वह QR कोड स्कैन कर सभा शुरू करे। इस छोटी-सी जिम्मेदारी से हर बच्चा प्रार्थना सभा के संचालन का हिस्सा बन गया।

असल बदलाव यह था कि बच्चे तकनीक को छूने, चलाने और समझने लगे। ब्लूटूथ कनेक्ट करना, मोबाइल फोन से QR CODE स्कैन करना, स्पीकर ऑन करना — ये सब काम वे आत्मविश्वास से करने लगे। कल तक जो माइक के सामने आने से हिचकिचाते थे, आज वे गर्व से कहते — "आज मेरी बारी है QR कोड स्कैन करने की!"

टेक्नोलॉजी को गंभीरता से लेने वाले केशव जी ने विनोबा ऐप के बारे में सुनते ही उसे तुरंत अपनाया और उसका सही उपयोग भी सीख लिया।

केशव जी कहते हैं, "हम शिक्षक बदलाव की कोशिश करते हैं, पर अधिकतर यह किसी की नज़र में नहीं आता। विनोबा कार्यक्रम ने यह कमी पूरी की है। यह जो सराहना देता है, ऊपर से देखने पर यह साधारण लगता है, लेकिन एक शिक्षक के लिए यह बहुत भारी भाव होता है — यह उसे प्रशासन के करीब लाता है, जिले के दूसरे शिक्षकों से जोड़ता है, और उसे लगता है कि उसकी मेहनत किसी बड़े उद्देश्य का हिस्सा है।"

विनोबा के माध्यम से उन्होंने अपने QR कोड प्रार्थना सभा के फ़ोटो और वीडियो साझा किए, और उन्हें न केवल प्रशंसा मिली, बल्कि यह कार्य अन्य स्कूलों में भी अपनाया जाने लगा।

आज चव्हाणवस्ती का यह छोटासा स्कूल सुबह की प्रार्थना सभा में सिर्फ गीत या कविता नहीं सुनाता — यह बच्चों को तकनीक से दोस्ती करना, जिम्मेदारी निभाना, और आत्मविश्वास से आगे बढ़ना सिखाता है। ■

विनोबा ऐप - सीखने-सिखाने का साथी

सिदूर (चंद्रपूर): मुझे आज भी वह दिन याद है - 5 सितम्बर, शिक्षक दिवस। जब मुझे "पोस्ट ऑफ द मंथ" पुरस्कार मिला और हाथों में मिला शैक्षणिक साहित्य। बच्चों को बाँटते समय उनके चेहरों पर जो चमक थी, वही मेरी सबसे बड़ी जीत थी। उसी क्षण मुझे पहली बार महसूस हुआ कि मैंने विनोबा ऐप के रूप में कोई ख़ज़ाना खोज लिया है।

सच कहूँ तो शुरुआत में मुझे इस ऐप में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी। लगा, ये भी एक नया झंझट होगा। विनोबा टीम के जिला समन्वयक नितेश मालेकर ने जब धैर्य से इसका महत्व समझाया और फिर एक कार्यशाला में इसके बारे में विस्तार से जाना, तो धीरे-धीरे मेरा दृष्टिकोण बदलने लगा।

अब मुझे शासन के परिपत्र खोजने की, फ़ोन में ढेर सारी फाइलें भरकर रखने की ज़रूरत ही नहीं रही। प्रश्नसंच, पाठ्यक्रम आधारित वीडियो, अध्ययन सामग्री - सब कुछ एक ही जगह, बस एक क्लिक पर। एक सरकारी शिक्षक का काम इतना आसान और व्यवस्थित हो जाएगा, मैंने कभी सोचा भी न था।

सबसे सुखद यह रहा कि इस मंच ने मुझे पूरे महाराष्ट्र के कई पुराने साथी शिक्षकों से फिर से जोड़ा। बातचीत, विचारों का आदान-प्रदान और साथ मिलकर आगे बढ़ने का जो माहौल बना, उसने मुझे नया उत्साह दिया।

जिला शिक्षा अधिकारी अश्विनी सोनवणे मैडम के मार्गदर्शन में जब इस ऐप के माध्यम से नवोदय और शिष्यवृत्ति परीक्षाओं का आयोजन सरल हुआ, तब मुझे विश्वास हो गया कि यह मंच केवल शिक्षकों के लिए ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की गुणवत्ता सुधारने का भी सशक्त साधन है। गडचिरोली में आयोजित शिक्षक सम्मेलन में अन्य ज़िलों के श्रेष्ठ शिक्षकों से सीखने का अवसर भी इसी कड़ी का हिस्सा रहा। इन्हीं प्रयासों का परिणाम था कि मेरी शाला सिदूर ने शैक्षणिक गुणवत्ता में नये मानदंड स्थापित किए और वर्ष २०२४-२५ में "मुख्यमंत्री माझी शाळा, सुंदर शाळा"उपक्रम में ज़िला स्तर पर दूसरा क्रमांक प्राप्त किया। इतना ही नहीं, इस विद्यालय पर मेरे विश्वास का प्रमाण है कि मैंने अपने बेटे स्पंदन को भी इसी साल यहाँ पहली कक्षा में प्रवेश दिलाया है।

आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मन में केवल आभार उमड़ता है - आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम और पूरी टीम के प्रति। शुरुआत में जिसे मैंने साधारण ऐप समझा था, वही अब मेरे लिए एक अनमोल साधन बन चुका है। यह समय बचाता है, काम आसान करता है, और सबसे ज़रूरी—शिक्षक को बेहतर शिक्षक बनाता है।

-अविनाश महादेव जुमड़े,
शिक्षक, जिला परिषद प्राथमिक शाला, सिदूर

शिक्षा संदेश

पानी की बोतल

शाम का समय था। दादाजी कमरे में आरामकुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ रहे थे, काव्या दौड़ती हुई उनके पास आई और उनके बाजू में बैठ गई।

"दादाजी, आज पेपर मत पढ़िए, मैं आपको एक कहानी सुनाने वाली हूँ, हमारे क्लास की! बिल्कुल सच्ची!" उसका चेहरा उत्साह से चमक रहा था।

"हाँ! सुनाओ ना!" दादाजी ने अखबार एक तरफ रखते हुए कहा।

काव्या ने कहानी बताना शुरू किया, "एक बार क्लास में हमारी क्लास टीचर पाटिल मैडम गणित पढ़ा रही थीं। तभी मेरी दोस्त नमजा अपनी जगह से उठी। गलती से उसका पैर उसके ही बैग से लग गया। बाजू में रखी पानी की बोतल जमीन पर गिर गई। पानी फैल गया। मैडम ने डांटकर कहा, 'ध्यान कहाँ रहता है तुम्हारा?' नमजा का चेहरा तो रोने जैसा हो गया था। उसका बैग भी थोड़ा गीला हो गया था!"

"अरेरे! बेचारी नमजा," दादाजी बोले, "फिर आगे क्या हुआ?"

"लंच ब्रेक में हमने टिफिन खाया और खो-खो खेलने मैदान में चले गए। हम खूब मज़े से खेल रहे थे। घंटी बजी तब हम दौड़ते हुए क्लास में गए। मराठी के क्लास में अचानक कमलेश को ज़ोर से हिचकी आई। वह रुक ही नहीं रही थी। मैडम बोलीं, 'अरे, जल्दी पानी पी लो! 'कमलेश बैग में बोतल ढूंढने लगा, लेकिन बोतल तो वहां थी ही नहीं। फिर क्या, पूरी क्लास बोतल ढूंढने लगी... कोई बेंच के नीचे देख रहा था, कोई दूसरों के बैग में ख़ोज रह थे, लेकिन बोतल कही नहीं मिली।"

तभी पिंकी चिल्लाई, "हम खो-खो खेल रहे थे ना, शायद वहीं छूट गई होगी।" पर वहां भी बोतल नहीं थी। हमारे चेहरे उतर गए।

फिर हमारे सुषमा मैडम का, यानी पीटी मैडम का क्लास शुरू हुआ। हमने उन्हें पूरी घटना बताई। मैडम हँसीं और बोलीं, "देखो, यह मुश्किल तुम सब की है। क्लास में पानी गिरता है, बोतल गुम हो जाती है। अब इस पर क्या उपाय करना है, यह तुम खुद ही ढूंढो." इतना कहकर वह चुपचाप बैठ गईं।

हम सब सोचने लगे। तभी मीना खड़ी हुई और बोली, "हम सब अपनी पानी की बोतलें ब्लैकबोर्ड के पास एक कोने में रखेंगे, इससे बेंच के पास गिरकर पानी नहीं फैलेगा।"

तभी विक्रम बोला, "लेकिन उससे जगह भी बहुत लगेगी!"

इस पर नमजा ने तुरंत कहाँ, "जैसे हमारी लाइब्रेरी में किताबों के लिए शेल्फ होती है, वैसे ही एक छोटा सा शेल्फ बनाया जाए तो?"

यह विचार सबको बहुत पसंद आया। लेकिन तभी किरण ने कहा, "बोतल गुम हो जाती है, उसका क्या? निहाल और मेरी बोतल एक जैसी दिखती है।"

फिर मैंने कहा, "प्लास्टिक के स्टिकर पर अपना पूरा नाम, क्लास और डिवीज़न लिखेंगे। इससे बोतल गुम भी हो गई तो तुरंत मिल जाएगी।"

उसके बाद एक पीटी क्लास में हमने सुंदर अक्षरों में नाम लिखकर अपनी-अपनी बोतलों पर चिपकाए। कुछ बच्चों ने स्कूल के पीछे पड़ी एक पुरानी लकड़ी की पटिया ढूंढ़कर निकाली। हमने स्कूल के टीचर से मदद माँगी। उन्होंने वह पटिया काटी और दीवार पर लगाने में मदद की। हमारी दो दिन की मेहनत के बाद हमारा 'बोतल स्टैंड' तैयार हो गया था। रंग-बिरंगी बोतलें रखकर वह शेल्फ किसी फूलों के बगीचे जैसा दिख रहा था।

कहानी खत्म होने के बाद दादाजी ने काव्या कि पीठ थपथपाते हुए ख़ुशी से बोले, "वाह! तुम सब ने मिलकर कितना बढ़िया सोचा! इसे ही 'प्रॉब्लम सॉल्विंग' कहते हैं। अपनी मुश्किल को खुद पहचानना और उस पर मिलकर उपाय खोजना। अमेरिका में बच्चे यही करते हैं, इसे ही 'क्रिटिकल थिंकिंग' और 'प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग' भी कहते हैं। मुझे तुम पर बहुत गर्व है!

- संदेश संजय थोरवे

'शिक्षण उत्सव' ने लाया प्रमुख शिक्षाविदों एक मंच पर

सिर्फ शिक्षा उपलब्ध कराना काफी नहीं : गरियाबंद कलेक्टर भगवान सिंह उइके ◆ अच्छे शैक्षिक परिणाम में बधाई के असली हकदार शिक्षक : दंतेवाडा DEO एस. के. अंबास्ता

दो जिले। कुल मिलाकर 200 प्रतिभागी। सभी अपने-अपने तरीके से शिक्षा के क्षेत्र में कुशल और विशेषज्ञ। शिक्षा प्रणाली के सभी प्रमुख सदस्य–शिक्षक और शिक्षा विभाग के अधिकारी। गरियाबंद और दंतेवाड़ा में ७ दिन के अंतराल में हुए 2 शिक्षण उत्सवों ने इन सभी ने मिलकर कार्यक्रम को एक जीवंत गतिविधि में बदल दिया।

दोनों जिलों के शिक्षा विभाग और ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) द्वारा आयोजित अलग अलग 'शिक्षण उत्सवों' में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों के शिक्षा अधिकारी और शिक्षक शामिल हुए। शिक्षकों और प्रशासकों ने मिलकर सरकारी स्कूलों के विभिन्न पहलुओं, अब तक किए गए कार्यों और विकास की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया।

गरियाबंद के कार्यक्रम में कलेक्टर श्री. भगवान सिंह उइके ने कहा, "सिर्फ शिक्षा उपलब्ध कराना ही काफी नहीं है, बच्चों में ज्ञान को आत्मसात करने और जीवन व पढ़ाई की समस्याओं से जूझने की क्षमता भी विकसित होनी चाहिए।" उन्होंने OLF द्वारा शिक्षकों को दी जा रही तकनीकी सहायता और प्रेरणा की सराहना की, जो ज़मीनी बदलाव ला रही है। इस अवसर पर गरियाबंद

DEO जगजित सिंह धीर, DMC शिवेश शुक्ल, APC मनोज केला, APC विल्सन थॉमस, ADSO श्याम कुमार चंद्राकर, ADPO बुद्ध विलास सिंह उपस्थित थे।

दंतेवाडा के उत्सव में जिला शिक्षा अधिकारी (DEO) श्री एस. के. अंबास्ता बोले, "दंतेवाड़ा का शिक्षा विभाग जिले की प्रतिष्ठा को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मैं सभी शिक्षकों से अपील करता हूँ कि वे इसी तरह अपना उत्कृष्ट कार्य जारी रखें।"

अन्य प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों में DMC हरीश गौतम APC कमल कर्मकार, BEOs भवानी पुनेन (गीदम), प्रमोद भदौरिया (कुआकोंडा), हरीश सिन्हा (दंतेवाड़ा), और राममिलन रावटे (कटेकल्याण) उपस्थित रहे। OLF के COO विश्वजीत पवार और टीम विनोबा के सदस्य दोनों जगह प्रमुख रूप से उपस्थित थे। दोनों उत्सवों में कुल 20 से अधिक शिक्षकों, साथ ही केंद्र प्रमुखों और विकासखंड अधिकारियों को सम्मानित किया गया।

संचार, खेल, और अनुभव साझा करने से भरे इस उत्सव में शिक्षकों और अधिकारियों—दोनों ने यह स्पष्ट रूप से माना कि 'शिक्षण उत्सव' में न सिर्फ ज़िले, बल्कि पूरे राज्य और देश की शिक्षा प्रणाली को एक दिशा में लाने की ताकत है।

पुणे ज़िला परिषद स्कूलों के 25 छात्र जाएंगे नासा

सातवीं कक्षा की छात्रा स्मृहा नासा की यात्रा को लेकर बेहद उत्साहित है। वह पहले ही नासा पर सारी जानकारी पढ़ चुकी है और भविष्य में अंतरिक्ष यात्री बनने का सपना देखती है। वहीं, छठी कक्षा की कस्तूरी का अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनने का का सपना है।

इन दोनों के साथ ही पुणे जिले के विभिन्न जिला परिषद (ZP) स्कूलों से 23 और छात्रों का चयन नासा की शैक्षिक यात्रा के लिए किया गया है। यह पहली बार है जब भारत के सरकारी ज़िला परिषद स्कूलों के छात्र किसी कैज़ुअल टूर के बजाय एक शैक्षणिक यात्रा के तहत नासा जाएंगे।

इस अवसर पर इन छात्रों का हौसला बढ़ाने के लिए पुणे में एक विशेष कार्यक्रम 'Coffee with Commissioner' आयोजित किया गया। यह पहल OLF की ओर से की गई थी।

कार्यक्रम में डॉ. चंद्रकांत पुलकुंदवार (डिवीजनल कमिशनर, पुणे), गजानन पाटिल (CEO, पुणे ZP), संजय नाइकडे जिला शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक), संजय डालमिया, CEO, OLF, समेत अन्य अधिकारी और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित रहे। बच्चों के शिक्षकों और अभिभावकों को भी इस खुशी के मौके पर आमंत्रित किया गया था।

अधिकारियों ने माना कि इस तरह की पहल से न केवल छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ेगा बल्कि सरकारी स्कूलों की छवि भी मज़बूत होगी। यह कदम उन अभिभावकों को भी प्रेरित करेगा जो अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेजना पसंद करते रहें है।

स्कूलों में नशा मुक्ति के ख़िलाफ़ राष्ट्रव्यापी अभियान

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) ने स्कूलों में नशाखोरी के ख़िलाफ़ एक बड़ा राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू करने के लिए हाथ मिलाया है। इस महत्वपूर्ण सहयोग को औपचारिक रूप देने के लिए दोनों संगठन 3 सितंबर, 2025 को नई दिल्ली स्थित सीबीएसई मुख्यालय में एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर करेंगे।

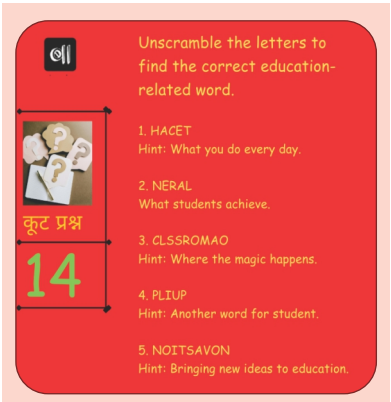

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापिका: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**